इस्लामी नमाज़

का

हिन्दी रूपान्तर

(अनुवाद सहित)

प्रकाशक

नज़ारत नशरो इशाअत क़ादियान

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْہٰی عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ط

العنکبوت-46

अनुवाद**: निःसन्देह नमाज़ बुरी बातों और बुरे कामों से रोकती है।**

इस्लामी नमाज़

का

हिन्दी रुपान्तर

(अनुवाद सहित)

प्रकाशक

नज़ारत नशरो इशाअत क़ादियान 143516

पुस्तक : **इस्लामी नमाज़** का हिन्दी रुपान्तर (अनुवाद सहित)

अनुवादक : **अलीहसन एम.ए.एच.ए.**

कम्पोज़र व डिज़ाइनर : **नईम-उल-हक़ कुरैशी**

कमप्यूटरीकृत : **2016 ई.**

प्रथम संस्करण

संख्या : **1000**

प्रकाशक : **नज़ारत नशरो इशाअत सदर अन्जुमन अहमदिया क़ादियान-143516, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब (भारत)**

मुद्रक : **फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान**

सबसे बेहतरीन दुआ नमाज़ है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

"नमाज़ की ज़ाहिरी सूरत को काफ़ी समझना नादानी है। अक्सर लोग रस्मी नमाज़ अदा करते हैं और बहुत जल्दी करते हैं जैसे एक नावाजिब टैक्स लगा हुआ है जल्दी गले से उतर जाए। बहुत से लोग नमाज़ तो जल्दी पढ़ लेते हैं लेकिन उसके बाद दुआ इतनी लम्बी मांगते हैं कि नमाज़ के वक़्त से दुगुना तिगुना समय लगाते हैं हालांकि नमाज़ तो ख़ुद दुआ है। जिसको यह नसीब नहीं है कि नमाज़ में दुआ करे उसकी नमाज़ ही नहीं। "

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-6 पृष्ठ-370)

नज़्म

(कलाम- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

कभी नुसरत नहीं मिलती दरे मौला से गन्दों को।
कभी ज़ाए नहीं करता वह अपने नेक बन्दों को।।
वही उसके मुक़र्रब हैं जो अपना आप खोते हैं।
नहीं राह उसकी आली बारगाह तक खुद पसन्दों को।।
यही तद्बीर है प्यारो कि माँगो उस से क़ुर्बत को।
उसी के हाथ को ढूँढो जलाओ सब कमन्दों को।।

(ज़मीमा तरियाक़ुल क़ुलूब पृष्ठ-5 प्रथम संस्करण)

विषय-सूची

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

इस्लामी नमाज़

"नमाज़ बड़ी ज़रूरी चीज़ है और मोमिन की मेराज (चरमोन्नति) है। ख़ुदा तआला से दुआ मांगने का सर्वश्रेष्ठ साधन नमाज़ है। ख़ुदा तआला की स्तुति करने और अपने गुनाहों के माफ़ कराने की मिश्रित सूरत का नाम नमाज़ है। उसकी नमाज़ कदापि नहीं होती जो इस उद्देश्य को सामने रख कर नमाज़ नहीं पढ़ता। अतः नमाज़ बहुत ही अच्छी तरह पढ़ो। खड़े हो तो इस प्रकार कि तुम्हारी सूरत साफ़ बता दे कि तुम ख़ुदा की इताअत और फ़रमांबरदारी में हाथ बाँधे खड़े हो और झुको तो ऐसे जिससे साफ़ प्रतीत हो कि तुम्हारा दिल झुकता है और सज्दा करो तो उस आदमी की भांति जिसका दिल डरता हो और नमाज़ों में अपने दीन और दुनिया के लिए दुआ करो।"

('अल-हकम' 31मई 1903)

"दुआ और नमाज़ का हक़ अदा करना छोटी बात नहीं, यह तो एक मौत अपने ऊपर लादनी है। नमाज़ इस बात का नाम है कि जब इन्सान उसे अदा करता है तो यह अनुभव करे कि इस जहान से दूर जहान में पहुँच गया हूँ।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 319)

नमाज़, इस्लाम के पाँच 'अरकान' (स्तम्भों) में से एक महत्वपूर्ण 'रुक्न' (स्तम्भ) है। अतः संक्षेप में इन अरकान का वर्णन लाभदायक होगा।

इस्लाम के अरकान

इस्लाम के पाँच बुनियादी 'अरकान' हैं :-

1.कलिमा तय्यबा 2. नमाज़ 3. रोज़ा 4. ज़कात 5. हज

कलिमा तय्यबा

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

अर्थात् अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं है और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके रसूल हैं।

नमाज़

प्रतिदिन पाँच बार- फ़ज्र, ज़ुहर, असर, मग़रिब और इशा के समय नमाज़ पढ़ना फर्ज़ है। नमाज़ और उसका अनुवाद आगे दिया जाएगा।

रोज़ा

रमज़ान के रोज़े रखना हर बालिग़ मुसलमान मर्द और औरत पर फर्ज़ है। बीमार और मुसाफिर दूसरे अवसर पर रोज़े रख कर गिनती पूरी कर सकते हैं। गर्भवती या दूध पिलाने वाली औरत पर रोज़े फर्ज़ नहीं, वे सामर्थ्यानुसार एक ग़रीब को रोज़ खाना खिलायें। सदा बीमार रहने वालों और बहुत बूढ़े लोगों पर भी रोज़ा फ़र्ज़ नहीं। वे भी सामर्थ्यानुसार हर रोज़ एक ग़रीब को खाना खिलायें। भूल से कुछ खा पी लेने से रोज़ा नहीं टूटता। यदि बिना किसी जायज़ कारण के कोई रोज़ा तोड़ता है तो उसका प्रायश्चित एक ग़ुलाम को आज़ाद करना या साठ दिन लगातार रोज़े रखना या साठ ग़रीबों को खाना खिलाना है। यदि सफ़र करना किसी की नौकरी या व्यवसाय

का हिस्सा है तो उसे रोज़ा रखना चाहिये। बच्चों को रोज़ा नहीं रखना चाहिये। रोज़े की हालत में दातुन करना, गीला कपड़ा ऊपर लेना बदन पर तेल लगाना, ख़ुशबू लगाना या सूंघना और थूक निगलना इत्यादि जायज़ है।

रमज़ान में इशा की नमाज़ के बाद 'तरावीह' की नमाज़ भी पढ़ी जाती है। असल में यह 'तहज्जुद' की नमाज़ है, जो सहूलियत के लिए इशा के बाद पढ़ ली जाती है।

ज़कात

क़ुर्आन के अनुसार ज़कात देने से धन में बरकत पड़ती है। ज़कात 'बैतुलमाल' में ही देनी चाहिए। वसीयत और दूसरे चन्दों के बावजूद ज़कात फ़र्ज़ है। ज़कात सोने, चांदी, सिक्के, ऊँट, गाय, भैंस, बकरी, भेड़, दुंबा इत्यादि और सभी प्रकार के अनाज, खजूर, अंगूर और व्यापार के माल पर होती है। हर वस्तु की ज़कात की दर निश्चित है। फ़सल में पकने पर केवल एक बार ज़कात ज़रूरी है। परन्तु बाकी चीज़ों का एक वर्ष तक पास रहना आवश्यक है।

ज़कात की दरें

52 तोला 6 माशा (अर्थात साढ़े बावन तोला) चांदी पर चालीसवाँ भाग। परन्तु पहने जाने वाले ज़ेवर जो कभी-कभी गरीबों को पहनने के लिए दिये जाते हों उन-पर ज़कात नहीं। सिक्के और करंसी पर 52 तोला 6 माशा (5.1/2 तोला) की कीमत के बराबर है। जो जानवर जोतने या लादने के काम आते हों और जिस ज़मीन का लगान सरकार लेती है। उस पर ज़कात नहीं। ज़कात योग्य अनाज की मात्रा 22 मन 25 सेर है। यदि फसल के लिए पानी कीमत अदा करके लिया गया हो तो बीसवां भाग, नहीं तो 10 वां

भाग है। यदि किसान भूमि का मालिक हो तो ज़कात की अदायगी उसके ज़िम्मे है यदि बटाई पर हो तो ज़कात सामूहिक तौर पर देय होगी।

हज

प्रत्येक मुसलमान जो स्वस्थ हो और सफ़र खर्च सहन कर सकता हो और रास्ते में शान्ति हो तो उस पर जीवन में एक बार मक्का शहर में जाकर हज करना फर्ज़ है। यदि कोई स्वयं हज न कर सकता हो तो दूसरा कोई उसके बदले में हज कर सकता है। हज निश्चित तिथियों में ही होता है जबकि 'उमरा' साल में किसी भी समय किया जा सकता है। मृत्युप्राप्त या अपंग लोगों की ओर से भी हज कराया जा सकता है। परन्तु दूसरे की ओर से हज वही कर सकता है जिसने पहले अपना हज कर लिया हो।

नमाज़

नमाज़ अल्लाह का बहुत बड़ा इनाम है। यह एक महान इबादत और दुआ है। नमाज़ अल्लाह के बेशुमार एहसानों और उपकारों का शुक्रिया अदा करने का नाम है, जो उसने हम पर अपनी कृपा से किए हैं और कर रहा है। नमाज़ से दु:ख और तकलीफ़ें दूर होती हैं और गुनाहों का मैल धुल जाता है। इस से मनुष्य सभी प्रकार की बुराइयों, गुनाहों और अश्लील बातों से रुक जाता है और अल्लाह और उसके बन्दे के बीच सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

नमाज़ पढ़ने के समय

एक दिन में पाँच अलग-अलग समयों पर नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है। अत: प्रत्येक मुसलमान को दिन में समयानुसार पाँच

बार नमाज़ अवश्य पढ़नी चाहिए। इन नमाज़ों के नाम और समय निम्नलिखित हैं :-

फ़ज्र की नमाज़

यह नमाज़ प्रातः (पौ फटने) से लेकर सूरज निकलने से पहले-पहले पढ़ी जाती है। इसकी दो 'रक्अत' सुन्नत और दो फर्ज़ होती हैं।

ज़ुहर की नमाज़

यह नमाज़ दोपहर के बाद जब सूरज ढलना आरम्भ हो जाता है, पढ़ी जाती है। इस नमाज़ में पहले चार रक्अत सुन्नत फिर चार रक्अत फर्ज़ और फिर दो रक्अत सुन्नत पढ़ी जाती हैं। इसके अतिरिक्त दो रक्अत नफ़्ल भी पढ़ सकते हैं।

अस्त्र की नमाज़

यह नमाज़ ज़ुहर के समय के समाप्त होने से लेकर धूप के पीला होने के बीच के समय में पढ़ी जाती है। इस नमाज़ की केवल चार रक्अत फर्ज़ होती हैं। अगर कोई चाहे तो फ़र्ज़ों से पहले चार रक्अत सुन्नतें पढ़ सकता है।

मग़रिब की नमाज़

जब सूरज डूब जाता है तब यह नमाज़ पढ़ी जाती है। इसकी तीन रक्अत फर्ज़ और दो सुन्नत होती हैं। इसी तरह दो रक्अत नफ़िल भी पढ़ सकते हैं।

इशा की नमाज़

मग़रिब की नमाज़ के लगभग आधे घंटे बाद से इस नमाज़ का समय शुरू हो जाता है और आधी रात तक यह नमाज़ पढ़ी जा सकती है। इस नमाज़ की चार रक्अत फर्ज़ उसके बाद दो सुन्नत

और तीन 'वितर' होती हैं। दो रक्अत नफ़िल सुन्नत के पश्चात् और दो वितर के बाद पढ़ सकते हैं।

नमाज़ की शर्तें

नमाज़ पढ़ने से पहले निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

1.समय 2. शरीर, कपड़ों और जगह की सफ़ाई 3. शरीर का ढका होना 4. मुँह क़िबला की ओर होना।

नमाज़ की 'नीयत' अर्थात् जो नमाज़ फर्ज़ या सुन्नत पढ़नी हो उसकी नीयत की जाय।

अज़ान

नमाज़ पढ़ने के लिए लोगों को मस्जिद में इकट्ठा करने के लिए अज़ान दी जाती है। जब अज़ान हो जाय तो सभी काम धन्धे बन्द करके नमाज़ के लिए मस्जिद में इकट्ठा हो जाना चाहिए। अज़ान देने का ढंग यह है कि एक आदमी वुज़ू करके क़िबला की ओर मुँह करके खड़ा हो जाता है और कानों में उंगलियाँ डाल कर ऊंची आवाज़ से ठहर-ठहर कर अज़ान के ये शब्द पढ़ता है :-

اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु अक्बर (चार बार)

अल्लाह सब से बड़ा है।

أَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह (दो बार)

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं।

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

<u>अश्हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह</u> (दो बार)

मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ

<u>हय्या अलस्-सलाह</u> (दायें ओर मुँह कर के **दो बार)**

नमाज़ के लिए आओ।

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

<u>हय्या अलल-फ़लाह</u> (बाईं ओर मुँह कर के **दो बार)**

कामयाबी प्राप्त करने के लिए आओ।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ

<u>अल्लाहु अक्बर</u> (दो बार)

अल्लाह सब से बड़ा है।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

<u>ला इलाहा इल्लल्लाह</u> (एक बार)

अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं।

नोट : फ़ज्र की नमाज़ की अज़ान में 'हय्या अलल् फ़लाह' के बाद दो बार निम्नलिखित शब्द भी पढ़े जाते हैं :

اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ

<u>अस्सलातु ख़ैरुम मिनन् नौम</u>

नमाज़ नींद से बेहतर है।

अज़ान के बाद की दुआ

अज़ान के बाद यह दुआ पढ़ी जाती है :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ

अल्ला हुम्मा रब्बा

हे हमारे पालनहार अल्लाह !

هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ

हाज़िहिद् दावतित् ताम्मति

इस कामिल दुआ

وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ

वस् सलातिल क़ायमति

और क़ायम रहने वाली नमाज़ (के बाद)

اٰتِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ

आति मुहम्मदा निल् वसीलता

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वसीला बना दे

وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ

वल फ़ज़ीलता वद् दरजतर रफ़ीअता

और उनकी प्रतिष्ठा और महानता को बढ़ा

وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ

वब्अस्हु मक़ामम् महमूदा

और उन को प्रशंसा के उस स्थान पर खड़ा कर

نِ الَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ

निल् लज़ी वअद्‌तहू

जिसका तूने उनसे वादा किया है

إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝ ط

इन्नका ला तुख़्लेफ़ुल मीआद

निःसन्देह तू अपने वादा के ख़िलाफ़ नहीं करता।

वुज़ू

प्रत्येक नमाज़ पढ़ने से पहले वुज़ू करना बहुत ज़रूरी है। वुज़ू करने की विधि इस प्रकार है। सब से पहले

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अर्थात् (अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बिन मांगे देने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।)

पढ़ कर दोनों हाथ अच्छी प्रकार धोये जाएं। फिर तीन बार कुल्ली करके मुँह की सफ़ाई की जाए, फिर तीन बार नाक में पानी डाल कर नाक अच्छी तरह साफ की जाए। इसके बाद दोनों हाथों से चेहरे पर पानी डाल कर तीन बार अच्छी तरह धोया जाए। इसके बाद पहले दाहिना हाथ, फिर बायां हाथ कुहनियों तक तीन बार धोया जाए। इसके बाद दोनों हाथ पानी से तर करके सर पर माथे से लेकर पीछे गर्दन तक फेरे जाएँ इसे **मसह** कहते हैं। इसके बाद शहादत की उंगलियों (तर्जनी) को कानों में और अंगूठों को कानों के बाहर पिछले हिस्से पर फिराया जाए। अन्त में दोनों पैर, पहले दायाँ फिर बायाँ टख्नों तक धोये जाएं।

तयम्मुम

यदि किसी स्थान पर पानी न मिले, या कोई व्यक्ति बीमार हो तो ऐसी स्थिति में वुज़ू की बजाय तयम्मुम किया जा सकता है। इस की विधि यह है कि साफ़ और स्वच्छ मिट्टी या दीवार पर दोनों

हाथ मार कर चेहरे पर और दोनों हाथों पर कुहनियों तक एक दूसरे हाथ से मल लिए जाएँ।

वुज़ू के बाद की दुआ

वुज़ू करने के बाद यह दुआ पढ़ी जाती है।

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ

अल्ला हुम्मजअल्ली मिनत् तव्वाबीना

हे अल्लाह ! मुझे तौबा करने वाला बना

وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَھِّرِیْنَ

वज्अल्ली मिनल मुततह् हिरीन

और मुझे पवित्र लोगों में से बना।

वुज़ू किन बातों से टूट जाता है

1.मल मूत्र करने और दुर्गन्ध निकलने से

2.रक्त, पस, या वीर्य निकलने से

3.लेट कर या किसी चीज़ से टेक लगाकर सोने से

मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ

मस्जिद में दाख़िल होते समय पहले दाहिना पैर अन्दर रखना चाहिए और यह दुआ पढ़नी चाहिए।

بِسْمِ اللّٰہِ

बिस्मिल्लाह

अल्लाह का नाम लेकर (दाखिल होता हूँ)

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ

अस्सलातु वस्सलामो अला रसूलिल्लाहि

अल्लाह की सलामती हो उसके रसूल पर।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَفْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

अल्ला हुम्मगफिरली ज़ुनूबी वफ़्तहली अब्वाबा रहमतिका

हे मेरे अल्लाह ! मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

नोट : मस्जिद से निकलते समय पहले बायाँ पैर बाहर रखना चाहिए और यही दुआ पढ़नी चाहिए। और अन्तिम शब्द 'रहमतिका' की जगह 'फ़ज़्लिका' (अर्थात् तेरा फ़ज़्ल हो) पढ़ना चाहिए।

इक़ामत

जब फ़र्ज़ नमाज़ शुरू होने लगे तो पहले इक़ामत कही जाती है। इक़ामत कहने का पहला हक़ उस का होता है जिसने अज़ान दी हो। इक़ामत के शब्द अज़ान के शब्दों की तरह ही हैं, लेकिन इस में हय्या अललफ़लाह के बाद दो बार "**क़द् क़ामतिस्सलात, क़द क़ामतिस्सलात**" कहा जाता है।

नमाज़ और उसका अनुवाद

नमाज़ की नीयत

सही तौर पर नमाज़ पढ़ने के लिए नीयत ज़रूरी है नीयत का अर्थ इरादा है नमाज़ आरम्भ करते समय दिल में यह इरादा होना चाहिए कि वह किस समय की नमाज़ और कौन सी नमाज़ पढ़ रहा है।

नीयत का संबंध दिल से है इस लिए दिल में यह तय होना चाहिए कि वह किस समय की और कितनी रक्अत नमाज़ शुरू करने लगा है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निम्नलिखित शब्दों में नीयत पढ़ना साबित है-

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ

इन्नी वज्जहतु वज्हिया

मैं अपना सारा ध्यान उस अल्लाह की ओर करता हूँ

لِلَّذِي فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

लिल्लज़ी फ़तरस् समावाति वल अर्ज़ा

जिसने धरती और आकाश बनाया है

حَنِيْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ○ سورة الانعام آیت 80

हनीफ़ौं वमा अना मिनल मुश्रिकीन

मैं पूर्णत: उसकी ओर झुकता हूँ और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ।

इसके बाद 'अल्लाहु अक्बर' कह कर दोनों हाथ कानों तक उठाकर सीने पर बाँध लिए जाते हैं। नाफ़ के नीचे भी हाथ बाँध सकते हैं।

सना

सीने पर हाथ बांधने के बाद सब से पहले जो दुआ पढ़ी जाती है, उसे सना कहते हैं।

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ

सुब्हान कल्ला हुम्मा

हे अल्लाह ! तू पवित्र (पाक) है

وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ

व बि हम्दिका व तबार कस्मुका

अपनी प्रशंसा के साथ और तेरा नाम बरकत वाला है

وَتَعَالٰى جَدُّكَ

व तआला जद्दुका

और बड़ी है तेरी शान

وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

वला इलाहा ग़ैरुका

और तेरे अतिरिक्त कोई इबादत के लायक़ नहीं

तअव्वुज़

इसके बाद तअव्वुज़ पढ़ा जाता है अर्थात्

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

अऊज़ुबिल्लाहि मिनश शैतानिर्रजीम

मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह की, धिक्कारे हुए शैतान से

सूरः फ़ातिहा

तअव्वुज़ के बाद सूरः फ़ातिहा पढ़ी जाती है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बिन मांगे देने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

अल्हम्दु लिल्लाहि

समस्त तारीफ़ें (प्रशंसाएँ) अल्लाह के लिए ही हैं

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

रब्बिल आलमीन

जो सभी लोकों का पालनहार है

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अर् रहमा निर रहीम

जो बिन मांगे देने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ

मालिके यौमिद्दीन

कर्मफल दिवस का मालिक है

اِيَّاكَ نَعۡبُدُ

इय्याका नअबुदु

हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं

وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ

व इय्याका नस्तईन

और हम तुझसे ही मदद मांगते हैं

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ

इहदि नस्सिरातल् मुस्तक़ीम

तू हमें सीधे रास्ते पर चला

صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ

सिरातल् लज़ीना अन अम्ता अलैहिम

उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तूने इनाम किए हैं

غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ

ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम

न कि उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तेरा प्रकोप हुआ

وَلَا الضَّآلِّيۡنَ

वलज़्ज़ाल्लीन

और (न उन लोगों के रास्ते पर) जो सीधे रास्ते से भटक गए।

آمین ط

आमीन

हे अल्लाह ! तू यह दुआ क़ुबूल कर।

सूरः इख़्लास

सूरः फ़ातिहा के बाद कुर्आन मजीद की कुछ आयतें या कोई सूरः पढ़ी जाती है, कोई विशेष सूरः या आयतें विशिष्ट नहीं। यहाँ पर 'सूरः इख़्लास' लिखी जाती है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बिन मांगे देने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ○

क़ुल हुवल्लाहो अहद

तू कह दे कि अल्लाह एक है

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ○

अल्ला हुस्समद

वह किसी का मुहताज नहीं

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ○

लम यलिद वलम यूलद

न उसने किसी को जना है न ही उसको किसी ने जना है

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

वलम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद

उस जैसा और उसके समान कोई नहीं

रुकू

यहाँ तक पढ़ने के बाद अल्लाहु अक्बर कहकर दोनों हाथ इस प्रकार घुटनों पर रखे जाते हैं कि कमर और टांगें परस्पर समकोण की अवस्था में आ जाएँ। इसे **रुकू** कहते हैं। रुकू में कम

से कम तीन बार यह दुआ पढ़ी जाती है।

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

<u>**सुब्हान रब्बि यल अज़ीम**</u>

पवित्र है मेरा रब्ब, बड़ी महानता वाला है।

इसके बाद यह शब्द कहते हुए हाथ छोड़कर सीधे खड़े हो जाते हैं।

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

<u>**समिअल्लाहु लिमन हमिदह**</u>

अल्लाह उसकी सुनता है जो उसकी हम्द (स्तुति) करता है।

फिर इसी अवस्था में यह **'तम्हीद'** पढ़ी जाती है।

رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ

<u>**रब्बना व-लकल हम्द**</u>

हे हमारे रब्ब ! तेरे लिए ही हर प्रकार की हम्द (स्तुतियाँ) हैं

حَمْدًا كَثِيْرًا

<u>**हम्दन कसीरन**</u>

तेरी हम्द अनन्त हैं

طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ

<u>**तय्यिबन मुबारकन फ़ीह**</u>

पवित्र हैं और बरकतों वाली हैं

इसके बाद 'अल्लाहु अक्बर' कह कर सज्दे की हालत में चले जाते हैं और कम से कम तीन बार इन शब्दों में हम्द की जाती है।

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى

<u>**सुब्हान रब्बि यल आला**</u>

पवित्र है मेरा रब्ब, बड़ी शान वाला है

इसके बाद अल्लाहु अक्बर कहते हुए घुटनों के बल बैठ जाते हैं और निम्नलिखित दुआ पढ़ते हैं-

दो सज्दों के बीच की दुआ

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ

अल्लाहुम्मग़ फ़िरली

हे अल्लाह ! मेरे गुनाह को बख़्श दे

وَارْحَمْنِیْ وَاهْدِنِیْ

वर हम्नी वहदिनी

और मुझ पर रहम कर और मुझे हिदायत दे

وَعَافِنِیْ وَاجْبُرْنِیْ

व आफ़िनी वजबुरनी

और मुझे ख़ैरियत से रख और मेरे नुक़सान को पूरा कर

وَارْزُقْنِیْ وَارْفَعْنِیْ

वरज़ुक़्नी वरफ़अनी

और मुझे रिज़्क़ दे और मुझे प्रतिष्ठा प्रदान कर

इसके बाद अल्लाहु अक्बर कहते हुए दूसरा सज्दा किया जाता है और पहले की भांति ही दुआ की जाती है।

यहाँ तक एक रक्अत पूरी हो जाती है। दूसरी रक्अत के लिए अल्लाहु अक्बर कह कर पुनः खड़े हो जाते हैं और सभी दुआएं पहले की भांति पढ़ी जाती हैं। केवल सना (सुब्हान कल्ला हुम्मा......) नहीं पढ़ा जाता। इसी प्रकार बाकी रक्अतें भी पढ़ी जाती हैं।

तशह्हुद

जब दो रक्अत पूरी हो जाती हैं तो घुटनों के बल बैठ कर निम्नलिखित दुआ पढ़ी जाती है।

التَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ

अत्त हिय्यातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत् तय्यिबातु

सदा की ज़िंदगी अल्लाह के लिए ही है और प्रत्येक इबादत और पवित्रताएं भी

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ

अस्सलामु अलैका अय्युहन्नबीयु

हे नबी (अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ! आप पर सलामती हो

وَرَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه

व रहमतुल्लाहि व-बरकातुहू

और अल्लाह की रहमतें और उसकी बरकतें हों

اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ

अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन

इसी प्रकार हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर भी अल्लाह की सलामती हो।

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त और कोई इबादत के योग्य नहीं

وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू

और मैं गवाही देता हूँ कि (हज़रत) मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसके बन्दे और रसूल हैं।

नोट: यदि केवल दो रक्अत नमाज़ पढ़नी हो तो इसके बाद

दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं। अर्थात्

दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

अल्ला हुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन

हे अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर विशेष कृपा कर

وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

व अला आले मुहम्मदिन

और आले मुहम्मद (अर्थात् आप से करीबी सम्बन्ध रखने वालों और आप के अनुयायियों) पर।

كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ

कमा सल्लैता अला इब्राहीमा

जैसा कि तूने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर कृपा की थी

وَعَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

व अला आले इब्राहीमा इन्नका हमीदुम् मजीद

और उनके अनुयायियों पर। निश्चय ही तू बड़ा महिमावान और बड़ी शान वाला है।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

अल्ला हुम्मा बारिक अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मदिन

हे अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बरकतें नाज़िल कर और आलि मुहम्मद (अर्थात् आप से करीबी सम्बंध रखने वालों और आप के अनुयायियों) पर

كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ

कमा बारक्ता अला इब्राहीमा

जैसा कि तूने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर बरकतें नाज़िल की थीं

وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ

<u>**व अला आले इब्राहीमा**</u>

और उनके अनुयायियों पर।

اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

<u>**इन्नका हमीदुम् मजीद**</u>

निःसन्देह तू बड़ा महिमावान और बड़ी शान वाला है।

दुआएँ

दुरूद शरीफ़ के बाद दुआएँ पढ़ी जाती हैं। कुछ दुआएँ नीचे लिखी जाती हैं।

رَبَّنَا اٰتِنَا

<u>**रब्बना आतिना**</u>

हे हमारे रब्ब ! हमें दे

فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً

<u>**फ़िद्दुनिया हसनतन**</u>

इस जीवन में हर प्रकार की भलाई

وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

<u>**व फ़िल आख़िरति हसनतन**</u>

और आख़िरत (परलोक) में भी हर प्रकार की भलाई

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

<u>**व क़िना अज़ाबन्नार**</u>

और हमें आग के अज़ाब से बचा

رَبِّ اجْعَلْنِىْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ

<u>**रब्बे जअल्नी मुक़ीमस्सलाति**</u>

हे मेरे रब्ब ! मुझे नमाज़ का पाबन्द बना

وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ

व मिन ज़ुर्रीयती

और मेरी औलाद को भी (नमाज़ का पाबन्द बना)

رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ

रब्बना व तक़ब्बल दुआ

हे हमारे रब्ब ! हमारी दुआएं क़ुबूल कर

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ

रब्बनग़ फ़िरली

हे हमारे रब्ब ! हमें बख़्श देना

وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

व लिवालिदय्या व लिल् मोमिनीना

और मेरे माँ बाप को भी और सभी मोमिनों को भी

يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ

यौमा यक़ूमुल हिसाब

जिस दिन हिसाब हो।

इसके बाद पहले दाईं ओर फिर बाईं ओर मुंह करके अस्सलामु अलैकुम व-रहमतुल्लाह कहते हुए सलाम फेर दिया जाता है और नमाज़ समाप्त हो जाती है।

नोट: यदि दो रक्अत से अधिक नमाज़ पढ़नी हो तो तशह्हुद के बाद अल्लाहु अक्बर कहकर खड़े हो जाते हैं और एक या दो रक्अतें पढ़ते हैं फिर उसी प्रकार घुटनों के बल बैठकर तशह्हुद, दुरूद शरीफ़ और दुआएं पढ़कर सलाम फेर देते हैं।

नमाज़-ए-वितर

वितर ताक़ (विषम) को कहते हैं यह नमाज़ वाजिब है जो इशा की नमाज़ के बाद कम से कम तीन रक्अत पढ़ी जाती है। वितर की तीसरी रक्अत में सूरः फ़ातिहा और क़ुर्आन करीम का कुछ हिस्सा पढ़ने के बाद दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ना मस्नून है।

कुछ लोग पहले दो रक्अत के बाद अत्तहियात पढ़कर सलाम फेर देते हैं फिर एक रक्अत पढ़ते हैं और कुछ अत्तहियात पढ़कर खड़े हो जाते हैं और तीसरी रक्अत पूरी करने के बाद सलाम फेरते हैं। दोनों तरीके जायज़ हैं। इसमें ऐतराज़ नहीं करना चाहिए।

दुआ-ए-क़ुनूत

वितर की तीन रक्अतें होती हैं। तीसरी रक्अत में रुकू के बाद दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ी जाती है।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ

अल्ला हुम्मा इन्ना नस्तईनुका

हे अल्लाह ! हम तुझ से ही मदद मांगते हैं

وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ

व नस्तग़ फ़िरुका, व नूमिनु बिका

और तुझ से ही बख्शिश चाहते हैं और तुझ पर ही ईमान लाते हैं

وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِىْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ

व-नतवक्कलु अलैका व नुस्नी अलैकल ख़ैर

और तुझ पर ही भरोसा करते हैं और तेरा गुण गाते हैं अच्छाई के साथ

وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ

व-नश्कुरुका व ला नक्फ़ुरुका

और तेरा शुक्र (धन्यवाद)करते हैं और तेरी नाफ़रमानी नहीं करते

وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ

व नख़्लओ व नतरुको

और हम उससे अलग हो जाते हैं और उसे छोड़ देते हैं

مَنْ يَفْجُرُكَ ۔ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ

मंय्यफ़्जुरुका अल्लाहुम्मा इय्या क नअ्बुदु

जो तेरी नाफ़रमानी करता है। हे अल्लाह ! हम केवल तेरी ही इबादत करते हैं

وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ

व-लका नुसल्ली व नस्जुदु

और तुझ से ही माँगते हैं और तेरे ही समक्ष सज्दा करते हैं

وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ

व इलैका नस्आ, व नहफ़िदु

और हम तेरी तरफ़ दौड़कर आते हैं और तेरी ख़िदमत में हाज़िर होते हैं

وَنَرْجُوْ رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ

व नरजू रहमतका व नख़्शा अज़ाबका

और हम तेरी रहमत की उम्मीद रखते हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं

اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ

इन्ना अज़ाबका बिल कुफ़्फ़ारे मुल्हिक़

नि:संदेह तेरा अज़ाब काफ़िरों (इन्कार करने वालों) को मिलने वाला है।

सज्दा सह्व

नमाज़ में अगर कोई ग़लती हो जाए या भूल से फ़र्ज़ की तर्तीब बदल जाए या कोई रुकू, सज्दा या क़अदा छूट जाए या रक्अतों की तादाद में शक पड़ जाए तो इस ग़लती को दूर करने के लिए दो सज्दे ज़्यादा किए जाते हैं जिसे **सज्दा सह्व** कहते हैं।

सज्दा सह्व करने का तरीक़ा यह है कि सलाम फेरने से पहले अल्लाहु अक्बर कहकर दो सज्दे किए जाएँ और हर सज्दे में कम से कम तीन बार "सुब्हान रब्बियल आला" पढ़ा जाए। इसके बाद सलाम फेर दिया जाए।

सज्दा-ए-तिलावत

क़ुर्आन करीम की तिलावत करते या सुनते समय जब भी सज्दे का ज़िक्र आए तो ख़ुदा के हुज़ूर सज्दा करना चाहिए और उसमें कम से कम तीन बार "सुब्हान रब्बियल आला" पढ़ें इसके अलावा चाहें तो और कोई दुआ करें।

आम तौर पर यह दुआ भी पढ़ी जाती है,

اَللّٰهُمَّ سَجَدَ لَكَ رُوْحِیْ وَجَنَانِیْ

अल्लाहुम्मा सजदा लका रूही व जनानी

हे अल्लाह ! मेरी रूह और मेरा दिल तेरे हुज़ूर सज्दा करता है।
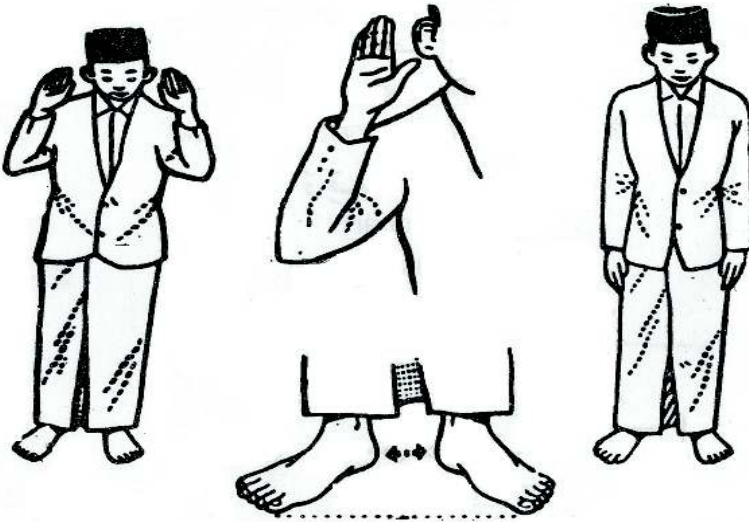
तक्बीर
(नमाज़ का आरम्भ)
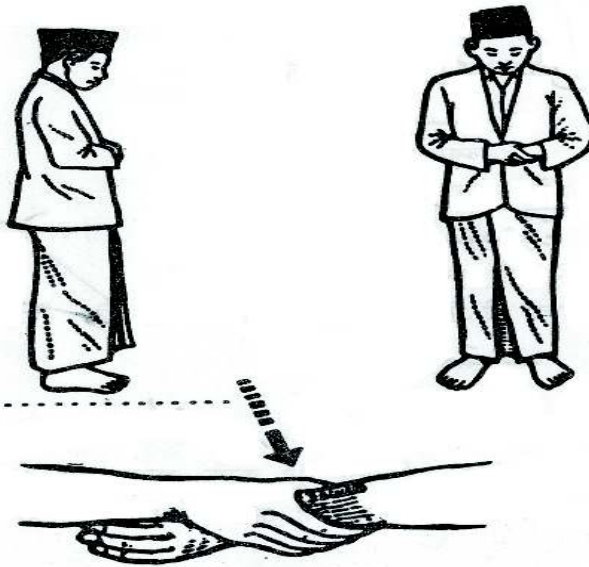
क़याम
(खड़े होने की हालत)

रुकू
(झुकने की हालत)

क़याम
(खड़े होने की हालत)

सज्दा

क़अदा
(बैठने की हालत)
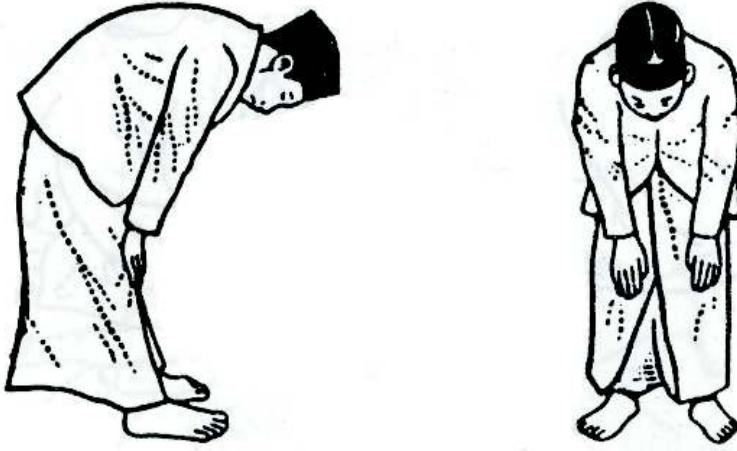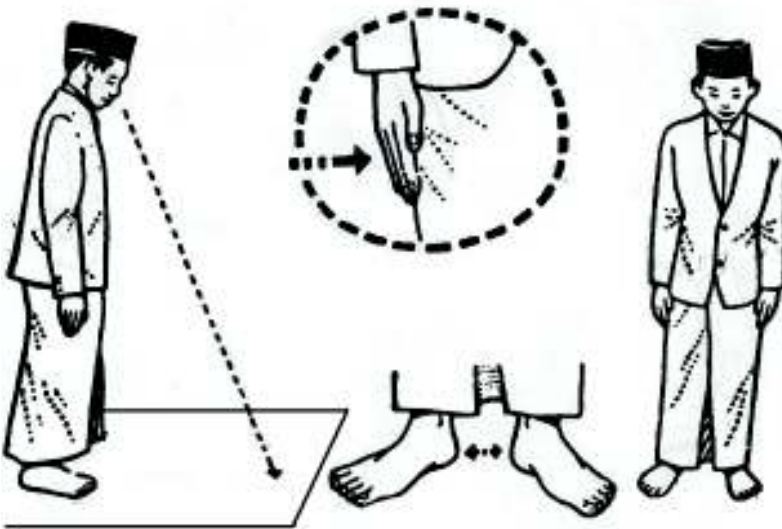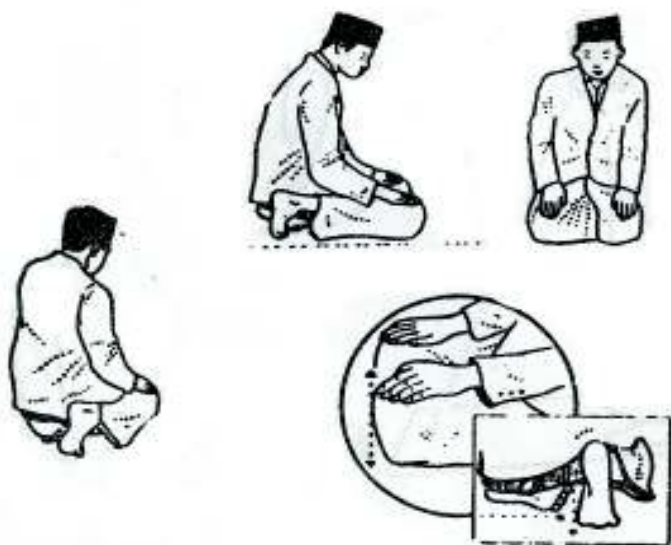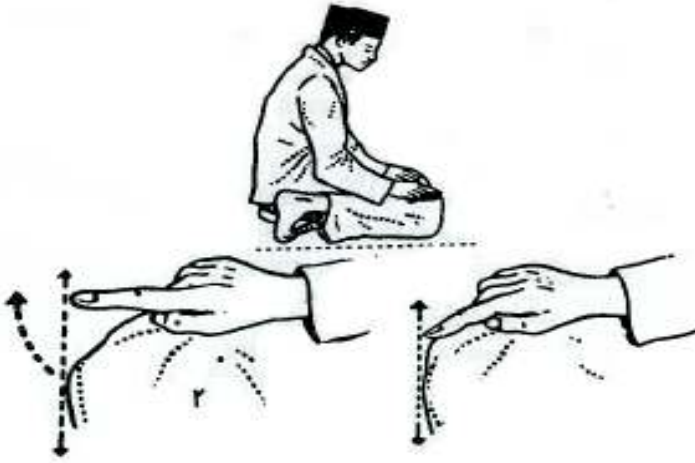
क़अदा
(दाएँ हाथ की शहादत की उंगली (तर्जनी) उठाने के साथ बैठने की हालत)
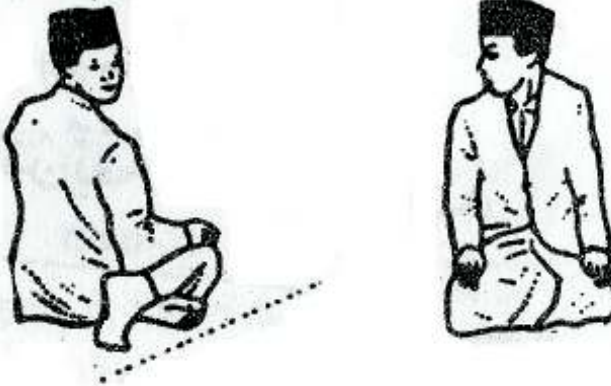
सलाम
(नमाज़ की समाप्ति)

नमाज़-ए-जुमा

नमाज़-ए-जुमा हर मुसलमान पर फर्ज़ है, सिवाय इसके कि कोई बीमार या अपाहिज हो। परन्तु औरतों पर जुमा के लिए मस्जिद में आना फर्ज़ नहीं। वे चाहें तो न आयें। जुम्मे की दो रक्अतें होती हैं। इसका समय ज़ुहर की नमाज़ वाला ही है। हाँ किसी कारण आगे पीछे हो सकता है। इसकी दो अज़ानें होती हैं। दूसरी अज़ान ख़ुत्बा आरम्भ होने से पहले दी जाती है। ख़ुत्बे के दौरान कोई बातचीत नहीं करनी चाहिए, क्योंकि ख़ुत्बा भी नमाज़ का ही हिस्सा है। पहले ख़ुत्बे में कलिमा शहादत के बाद सूरह अल-फ़ातिहा पढ़ी जाती है और फिर हालात के अनुसार इमाम कुछ दीनी नसीहतें करता है। पहला ख़ुत्बा देने के बाद इमाम कुछ क्षणों के लिए बैठ जाता है और फिर खड़े होकर दूसरा ख़ुत्बा देता है। जो निम्नलिखित है: -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ

अल्हम्दु लिल्लाहि नहमदुहू

हर एक हम्द अल्लाह के लिए ही है हम उसी का गुणगान करते हैं

وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ

व नस्तईनुहू व नस्तग़्फ़िरुहु

और हम उसी से मदद मांगते हैं और उसी से बख़्शिश चाहते हैं

وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ

व नूमिनु बिही व-नतवक्कलु अलैहि

उसी पर हमारा ईमान है और उसी पर हमें भरोसा है

وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا

व नऊज़ु बिल्लाहि मिन शुरुरि अनफ़ुसिना

और हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं अपने मन की बुराइयों और

दुर्भावनाओं से

وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللهُ

व-मिन सय्यिआति आमालिना मंय्यहदिहिल्लाहु

और अपने बुरे कर्मों से, जिसे अल्लाह हिदायत दे

فَلَا مُضِلَّ لَهٗ

फ़ला मुज़िल्ला लहू

उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता

وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ

व मंय्युज़लिल्हु फ़ला हादिया लहू

और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता

وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ

व नश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु

और हम गवाही देते हैं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं

وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

व नश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू

और हम गवाही देते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं

عِبَادَ اللهِ رَحِمَكُمُ اللهُ اِنَّ اللهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ

इबादल्लाहि रहिमकुमुल्लाहु इन्नल्लाहा यअमुरु बिल अदले

हे अल्लाह के बन्दों ! अल्लाह तुम पर रहम करे। अल्लाह तुम्हें न्याय

وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَاءِ ذِي الْقُرْبٰى

वल एहसान व ईताइज़िल कुर्बा

और एहसान और निकट सम्बन्धियों की तरह अच्छा व्यवहार करने का हुक्म देता है

وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاءِ

व यन्हा अनिल फ़हशाइ

और अश्लील बातों से रोकता है

وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ

वल मुन्करे वल बग़्ये

और बुरी बातों और बगावत आदि से भी।

يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ

यएज़ुकुम लअल्लकुम तज़क्करून

वह तुम को नसीहत करता है ताकि तुम उसको याद रखो।

اُذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ

उज़्कुरुल्लाहा यज़्कुरकुम

अल्लाह को याद करते रहा करो वह तुम्हें याद रखेगा

وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ

वदऊहु यस्तजिब लकुम व ल ज़िकरुल्लाहि अक्बर

और उसी को पुकारो वह तुम्हें जवाब देगा और अल्लाह का 'ज़िकर' ही सब से बड़ा है।

नोटः जुमा के खुत्बा से पहले चार सुन्नत और खुत्बा के बाद दो फर्ज़ (जो इमाम पढ़ाता है) और फिर दो सुन्नत पढ़ी जाती हैं पहली चार सुन्नत की बजाय दो सुन्नत भी पढ़ सकते हैं।

नमाज़-ए-ईद

ईद मुसलमानों का एक धार्मिक त्योहार है। साल में ईद के दो त्योहार होते हैं।

ईदुल फ़ितर- शव्वाल के महीने की पहली तारीख को मनाई जाती है।

<u>ईदुल अज़हा-</u> ज़ुलहज्ज महीने की दसवीं तारीख को मनाई जाती है।

इन दोनों ईदों में सभी पुरूष, स्त्रियाँ और बच्चे मिलकर किसी खुले स्थान पर दो रक्अत नमाज़ पढ़ते हैं। यह नमाज़ बाजमाअत पढ़ी जाती है अकेले पढ़ना जायज़ नहीं। नमाज़ का समय प्रातः 7-8 बजे से लेकर लगभग 9 बजे के बीच होता है। पहली रक्अत में **सना** (सुब्हान कल्लाहुम्मा.....) पढ़ने के बाद इमाम सात बार दोनों हाथ कानों तक उठाकर ऊँची आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहे। इसी प्रकार दूसरी रक्अत में भी पाँच बार दोनों हाथ कानों तक उठा कर ऊँची आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहा जाता है। जुम्मे की भांति ईद के भी दो ख़ुत्बे होते हैं। ख़ुत्बे के बाद सब एक साथ हाथ उठाकर दुआ करते हैं।

नमाज़-ए-जनाज़ा

जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो कब्र में दफ़न करने से पहले उसके लिए नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ी जाती है। इस नमाज़ में रुकू या सज्दे नहीं होते। इमाम 'मय्यत' के सामने खड़ा हो जाता है, और सभी लोग इमाम के पीछे सफ़ों (कतारों) में खड़े हो जाते हैं। सफ़ों की संख्या विषम होनी चाहिए। इमाम अल्लाहु अक्बर की तक्बीर कहता है और लोग भी धीमी आवाज़ में कहते हैं। फिर सीने पर हाथ बांध कर सना, तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहा पढ़ते हैं। दूसरी तक्बीर के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाता है। तीसरी तक्बीर के बाद जनाज़े की दुआ पढ़ी जाती है। चौथी तक्बीर के बाद अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह कहते हुए सलाम फेर दिया जाता है।

किसी के देहान्त पर ऊँची-ऊँची आवाज़ में गले फाड़-

फाड़ कर रोना, कपड़े फाड़ना और शरीर को नोचना इत्यादि इस्लाम में मना है। हाँ ग़म के अवसर पर आँसू निकल जाना जिस पर इन्सान को इख्तियार नहीं, जायज़ है। इसी प्रकार किसी की वफ़ात पर तीसरे, दसवें और चालीसवें दिन इकट्ठे होकर रस्में करना और बिला वजह की फुज़ूल खर्चियाँ करना इस्लाम में जायज़ नहीं।

जनाज़ा की दुआ

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا

अल्ला हुम्मग़फ़िर लिहय्यिना व मय्यतिना

हे अल्लाह ! बख़्श दे हमारे जीवितों को और जो मर गए हैं

وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَ كَبِيْرِنَا

व शाहिदना व ग़ाइबना व सग़ीरिना व कबीरिना

और जो हाज़िर हैं और जो हमारे बीच मौजूद नहीं, हमारे छोटों और हमारे बड़ों को

وَذَكَرِنَا وَاُنْثٰنَا ـ اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا

व ज़करिना व उन्साना अल्ला हुम्मा मन अहयैतहू मिन्ना

और हमारे मर्दों को और हमारी औरतों को भी। हे अल्लाह ! तू हम में से जिसे जीवित रखे

فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ ـ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا

फ़अहयिही अलल् इस्लाम व मन तवफ़्फैतुहू मिन्ना

तो उसे इस्लाम पर जीवित रख और जिसे तू हम में से मृत्यु दे

فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ ـ اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ

फ़तवफ़्फहू अलल् ईमान अल्ला हुम्मा ला तहरिम्ना अजरहू

तो उसे ईमान के साथ मृत्यु दे। हे अल्लाह ! उसकी नेकियों के फल से हमें वंचित न रख

وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ

वला तफ़्तिन्ना बअदहू

और उसके बाद हमें किसी झगड़े या क्लेश में न डाल

नफ़ली नमाज़ें

नमाज़-ए-तहज्जुद- तहज्जुद की नमाज़ का समय आधी रात के बाद से पौ फटने तक का होता है। यह दो-दो रक्अत के रूप में कुल आठ रक्अत पढ़ी जाती हैं। समय कम हो तो दो रक्अत भी पढ़ी जा सकती हैं। क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने इसकी ओर विशेष ध्यान दिलाया है क्योंकि उस समय की दुआओं में एक खास असर होता है।

नमाज़-ए-तरावीह- रमज़ान के महीने में इशा की नमाज़ के बाद आठ रक्अत नमाज़-ए-तरावीह पढ़ी जाती है। कुछ लोग बीस रक्अत भी पढ़ते हैं। यह नफ़ल नमाज़ है इस पर ऐतराज़ नहीं करना चाहिए, जो बीस पढ़ना चाहे वह बीस पढ़ ले।

नमाज़-ए-इस्तिस्क़ा- अकाल पड़ने और बारिश न होने की स्थिति में दिन के समय खुले मैदान में इमाम चादर ओढ़कर दो रक्अत नमाज़ पढ़ाये। क़िरअत ऊँची हो और नमाज़ के बाद हाथ उठाकर इमाम दुआ कराए।

नमाज़-ए-इश्राक़- सूरज निकलने के बाद से कुछ दिन चढ़े तक यह नमाज़ 2 रक्अत पढ़ी जाती है।

नमाज़-ए-चाश्त- इश्राक से थोड़ी देर बाद चार से बारह रक्अत तक नफ़िल पढ़े जाते हैं।

नमाज़-ए-ज़वाल- जब सूरज ढलना आरम्भ हो जाए तो दो से चार रक्अत नमाज़-ए-ज़वाल पढ़ी जाती है।

नमाज़-ए-अव्वाबीन- मग़रिब की नमाज़ के बाद से इशा की अज़ान के बीच जो नवाफ़िल अदा किए जाते हैं उसे नमाज़-ए-अव्वाबीन कहते हैं।

नमाज़-ए-कुसूफ़ व ख़ुसूफ़- सूर्य ग्रहण को कुसूफ़ और चन्द्र ग्रहण को ख़ुसूफ़ कहते हैं। इस अवसर पर शहर के सब लोगों को मस्जिद या खुले मैदान में जमा होकर 2 रक्अत नमाज़ पढ़नी चाहिए। हर रक्अत में कम से कम दो रुकू किए जाएँ अर्थात् क़िरअत के बाद दूसरा रुकू किया जाए फिर सज्दा हो। इस नमाज़ के रुकू और सज्दे लम्बे होने चाहिएँ। नमाज़ के बाद इमाम ख़ुत्बा दे जिसमें तौबा इस्तिग़फ़ार और कर्मों के सुधार हेतु नसीहत की जाए।

नमाज़-ए-इस्तिख़ारा- महत्वपूर्ण धार्मिक और सांसारिक काम शुरू करने से पहले उसके बा बरकत होने और सफ़लता पाने के लिए यह नमाज़ पढ़ी जाती है। इसमें रात को सोने से पहले दो रक्अत 'नफ़िल' पढ़े जाते हैं जिसमें अन्य दुआओं के साथ-साथ यह दुआ भी पढ़ी जाती है।

दुआ-ए-इस्तिख़ारा

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُكَ

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्तख़ीरुका

हे मेरे अल्लाह ! मैं तुझ से भलाई चाहता हूँ

بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ

बि इल्मिका व अस्तक़्दिरुक़ा बि क़ुदरतिक़ा

तेरे ज्ञान के साथ और तेरी कुदरत द्वारा मैं तुझ से सामर्थ्य (तौफ़ीक़) मांगता हूँ

وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ

व अस्अलुका मिन फ़ज़्लिकल अज़ीम

और तुझ से बड़ा वरदान (फ़ज़्ल) मांगता हूँ

فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ

फ़इन्नका तक़्दिरु व-ला अक़्दिरु

क्योंकि तू हर चीज़ पर समर्थ है मैं नहीं

وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ

व तअलमु व-ला आलमु व अन्ता अल्लामुल ग़ुयूब

तू जनता है और मैं नहीं जनता और तू ग़ैब की बातों को अच्छी तरह जनता है

اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَيْرٌ لِّیْ

अल्लाहुम्मा इन कुन्ता तअलमु अन्ना हाज़ल अमरा ख़ैरुन ली

हे मेरे अल्लाह ! यदि तू जानता है कि यह मामला मेरे लिए बेहतर है

فِیْ دِيْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ

फ़ी दीनी व मआशी व आकिबति अमरी

मेरे दीन और सांसारिक जीवन में और मेरे काम के परिणाम के लिहाज़ से

فَاقْدِرْهُ لِیْ وَيَسِّرْهُ لِیْ

फ़क़्दिरहु ली व यस्सिर हु ली

तो तू उसको मेरे लिए मुक़द्दर कर दे और मेरे लिए उसे आसान कर दे

ثُمَّ بَارِكْ لِیْ فِيْهِ وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ

सुम्मा बारिक ली फ़ीहि व इन कुन्ता तअलमु

और फिर मेरे लिए उसे बरकत वाला (शुभ) कर दे और यदि तू जानता है

اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ

अन्ना हाज़ल अमरा शर्रुन ली फ़ी दीनी व मआशी व आक़िबति

कि यह मामला मेरे दीनी, और सांसारिक जीवन और मेरे काम के अंजाम के लिहाज़ से मेरे लिए बुरा है

اَمْرِيْ فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ

अमरी फ़सरिफ़्हु अन्नी वसरिफ़्नी अन्हु

तो उसको मुझ से दूर कर दे और मुझे उस से दूर कर दे

وَاقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ ارْضِنِيْ بِهٖ

वक़्दुर लि यल ख़ैरा काना सुम्मा इरज़िनी बिही

और जहाँ भलाई हो, उसे मेरे लिए मुक़द्दर कर दे फिर मुझे उससे राज़ी कर दे।

निकाह

निकाह करना सुन्नत है जो व्यक्ति निकाह की ताक़त रखने पर भी निकाह नहीं करता वह अल्लाह तआला के आदेश और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत की खुली-खुली नाफ़रमानी करता है।

निकाह की निम्नलिखित शर्तें हैं :-

1.मर्द और औरत से पूछा जाए कि क्या वे आपस में निकाह करने पर राज़ी हैं।

2.औरत की ओर से उसके वली (निगरान) अर्थात् करीबी रिश्तेदार जैसे पिता, यदि पिता न हो तो भाई या फिर दूसरे करीबी

रिश्तेदार की भी मंज़ूरी ज़रूरी है। शरीअत ने औरत के लिए वली का होना ज़रूरी ठहराया है।

3.महर[1] नियुक्त हो। महर के बिना निकाह नहीं हो सकता, शरीअत ने महर की कोई हद मुकर्रर नहीं की। पुरुष अपनी हैसियत के अनुसार जितना दे सकता है उतना ही महर मुकर्रर होना चाहिए। यदि कोई महर ज़्यादा रख लेता है किन्तु अदा नहीं करता तो वह गुनहगार है।

4.निकाह का ऐलान (घोषणा) होना चाहिए ऐलान जितने ज़्यादा लोगों में किया जाए उतना ही अच्छा है क्योंकि छुपकर निकाह करना निकाह नहीं कहलाता।

ख़ुत्बा निकाह

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ

अल्हम्दु लिल्लाहि नहमदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहू व नूमिनु बिही

समस्त प्रशंसाओं (तारीफ़ों) का हक़दार अल्लाह ही है हम उसकी स्तुति करते हैं और उसी से मदद मांगते हैं और अपने गुनाहों की उस से माफी मांगते हैं और उस पर ईमान लाते हैं।

وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا

व नतवक्कलु अलैहि व नऊज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अनफ़ुसिना

और हम उस पर भरोसा करते हैं और हम उस की पनाह मांगते हैं अपने नफ़्सों की बुराइयों से

1. महर उस धन को कहते हैं जो निकाह के समय औरत को उसके पति की ओर से धन या किसी अन्य जायदाद के रूप में दिया जाता है या देने का इक़रार किया जाता है।

وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ

व मिन सय्यिआति आमालिना मंय्यहदिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल्ला लहू

और अपने बुरे कर्मों से, जिसको अल्लाह हिदायत दे उसको कोई गुमराह नहीं कर सकता

وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ

व मंय्युज़लिल्हु फ़ला हादिया लहू

और जिस को अल्लाह गुमराह क़रार दे उसको कोई हिदायत नहीं दे सकता

وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

व नश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहू व नश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू

हम गवाही देते हैं कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं वह अकेला है और उसका कोई साझीदार नहीं और हम गवाही देते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बंदे और रसूल हैं।

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط

अम्मा बअदु फ़अऊज़ुबिल्लाहि मिनश शैतानिर रजीम

इसके बाद मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह की, धिक्कारे हुए शैतान से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बिना माँगे देने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ

या अय्यु हन्नासुत्तकू रब्बकुम

हे लोगो ! अपने रब्ब से डरो

الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ

अल्लज़ी ख़लका कुम मिन नफ़सिन वाहिदतिन

जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया

وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا

व ख़लका मिनहा ज़ौजहा

और उसी से उसके लिए जोड़ा बनाया

وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ج

व बस्सा मिनहुमा रिजालन कसीरन व निसाअन

और फैला दिए उन दोनों से बहुत से पुरुष और स्त्रियाँ

وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ

वत्तकुल्लाहा अल्लज़ी तसाअलूना बिही वल अरहाम

और अल्लाह से डरो जिसका वास्ता देकर तुम मांगते हो और रिश्तेदारों का भी ख़्याल रखो

إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ○ سورة النسآء آيت 2-3

इन्नल्लाहा काना अलैकुम रक़ीबा

अल्लाह तआला हर समय तुम पर निगहबान है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ

या अय्यु हल्लज़ीना आमनुत्तक़ुल्लाहा

हे लोगों जो ईमान लाए हो। अल्लाह से डरो

وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ○ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ

व क़ूलू क़ौलन सदीदन युस्लिह लकुम आमालकुम

और सीधी सच्ची बात किया करो जिससे वह तुम्हारे काम ठीक कर देगा

وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ

<u>**व यग़्फ़िर लकुम ज़ुनूबकुम व मंय्युतिइल्लाहा व रसूलहू**</u>

और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानता है

فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ○ سورة الاحزاب آیت 72-71

<u>**फ़क़द फ़ाज़ा फ़ौज़न अज़ीमा**</u>

तो समझो कि वह कामयाब हो गया

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ

<u>**या अय्यु हल्लज़ीना आमनुत्तक़ुल्लाहा**</u>

हे ईमानदारो ! अल्लाह से डरो

وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ

<u>**वल तन्ज़ुर नफ़सुम मा क़द्दमत लिग़द**</u>

और चाहिए कि हर एक जान यह ध्यान रखे कि वह आने वाले कल के लिए क्या भेज रही है।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ○ سورة الحشر آیت 19

<u>**वत्तक़ुल्लाहा इन्नल्लाहा खबीरूम बिमा तअमलून**</u>

अल्लाह से डरो जो तुम करते हो अल्लाह उसे निःसन्देह जानता है।

इस ख़ुत्बा निकाह के पश्चात समय और मौक़ा महल के अनुसार संक्षिप्त रूप से कुछ नसीहतें अपनी भाषा में भी की जा सकती हैं जिस में पति-पत्नी और उनके परिवारों को नसीहतें हों और फिर ऐलान किया जाए कि अमुक औरत का निकाह अमुक पुरुष से इतने हक़ महर पर होना क़रार पाया है। फिर हर दो से (अर्थात् लड़के से और लड़की के वली से पूछा जाए कि क्या यह निकाह उन्हें मंजूर है ? यदि वे इक़रार कर लें कि उन्हे मंजूर है तभी

सही तौर पर निकाह होता है। इसे इस्लामी इस्तिलाह (परिभाषा) में **ईजाब** व **क़बूल** कहते हैं।

चूंकि औरत को पर्दा में रहने का आदेश है इस लिए औरत की मंशा के अनुसार उसकी ओर से उसका वली ईजाब व क़बूल करेगा, औरत का मज्लिस में होना ज़रूरी नहीं। यदि किसी मजबूरी के कारण पुरुष और औरत के वली निकाह की मज्लिस में हाज़िर न हो सकते हों तो वे अपनी ओर से अपने-अपने वकील मुकर्रर कर सकते हैं ताकि वे उनकी ओर से ईजाब व क़बूल कर सकें।

ईजाब व क़बूल के बाद पुरुष व स्त्री अब पति पत्नी बन गए। मिलन के बाद पति को एक दावत देनी चाहिए जिसे "दावत-ए-वलीमा" कहते हैं। वलीमा सुन्नत है इस में करीबी रिश्तेदारों, दोस्तों और गरीबों को खाने पर बुलाना चाहिए।